



## International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476  
IJHS 2018; 4(3): 43-44  
© 2018 IJHS  
www.homesciencejournal.com  
Received: 15-07-2018  
Accepted: 28-08-2018

निशा कुमारी

गृह.विज्ञान विभाग, ल०ना०मि०वि०  
दरभंगा, बिहार, भारत।

### संतानोत्पत्ति में संतति तथा जननी स्वास्थ्य की समस्याएँ

निशा कुमारी

सारांश

‘संतान’ जीवन की वो खुशी है जो हर कोई चाहता है उसके घर आँगन में खुशियाँ ले आए। ‘माँ’ शब्द सुनना हर स्त्री के लिए अलग ही एहसास होता है, जिसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता, परन्तु किसी-किसी दंपति के जीवन में, उसके आँगन में उस किलकारी की कमी रह जाती है जिसका वह सुख चाहते हैं।

मातृत्व नारी जीवन की चरम सार्थकता है। मातृत्व शब्द में सम्पूर्ण सृष्टि निहित है। इसी से नए जीवों की रचना होती है। फलतः जीव-सृष्टि का भी अस्तित्व शाश्वत रूप से बना रहता है। इससे पृथ्वी पर जीवों का जीवन-चक्र निरंतरता ग्रहण करता है। अपनी संतान को जन्म देना सभी जीवों का स्वाभाविक कार्य है। मानव संतति तो समाज की आधारशिला है। प्रत्येक जीव-वर्ग में नर तथा मादा, दोनों रहते हैं। इनके शरीर में विशेष प्रजनन अंग होते हैं जिनकी मदद से वे संसार में एक नए जीव को लाते हैं।

**कूट शब्द**— संतान, संतति, संसार, जीव-वर्ग, मातृत्व, स्वास्थ्य, समस्याएँ

**प्रस्तावना**

संतानोत्पत्ति में पुरुष एवं महिला दोनों की सहभागिता होती है। किन्तु माता की विशेष भूमिका होती है। युवावस्था में प्रवेश के साथ-साथ महिलाएँ हर महीना मासिक धर्म के चरण से गुजरती हैं। दरअसल एक वयस्क महिला गर्भ-धारण करने के लिए प्राकृतिक रूप से तैयार होती हैं। पुरुष से सम्बन्ध होने पर स्त्रियों के अंडाशय में अंडाणु प्रसव के लिए तैयार हो जाते हैं, और उससे नवजात जन्म लेता है।

गर्भावस्था में महिलाओं के खुराक और स्वास्थ्य के देख-रेख की विशेष आवश्यकता है। बच्चे के जन्म तक माँ और बच्चे का स्वास्थ्य एक-दूसरे से जुड़ा होता है।

अतः समय-समय पर भ्रूण के विकास को जाँचा जाता है, और माँ के स्वास्थ्य को भी देखा जाता है। ऐसे समय में महिलाओं (संतति) की खून की कमी, रक्त दबाव आदि की समस्याएँ आ सकती हैं, इन सभी समस्याओं का निदान करते हुए संतति को अपने गर्भ में पल रहे बच्चे का विशेष ध्यान रखना होता है।

नए जीव का निर्माण पुरुष शुक्राणु और स्त्री अंडाणु के संयोग से होता है। गर्भाधान के लगभग नौ महीने के बाद बच्चे का जन्म होता है। गर्भकाल में आमतौर पर 280 दिन लगते हैं। स्त्री शरीर में गर्भ का स्थापित होना माता-पिता के लिए बड़ी महत्वपूर्ण घटना होती है। शिशु प्रकृति द्वारा प्रदत्त उच्च श्रेणी के सौन्दर्य की अनमोल देन है।

संसार में आने के पूर्व तथा आने के बाद होने वाले शिशु के विकास पर सृष्टि की निरंतरता निर्भर करती है। गर्भधारण के लक्षणों का शुरु में ही पता लगाना कुछ कठिन होता है। परन्तु प्रकृति ने इसकी सुचना देने के लिए विशेष व्यवस्था कर रखी है। इन लक्षणों से सिद्ध होता है की गर्भ की स्थापना हो चुकी है और अब एक नए जीव का निर्माण आरम्भ हो गया है।

कुछ महिलाओं को गर्भकाल के दौरान हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, जैसी परेशानियाँ हो जाती हैं या उनके परिवार में ही ऐसी बीमारी का इतिहास छिपा रहा होता है, जिसका पता प्रिनेटल टेस्ट से चल जाता है। कुछ अधिक वजन वाली महिलाएँ भी होती हैं जिन्हें प्रेगनेंसी के 6 माह पूर्व से अपना वजन कम करने की सलाह दी जाती है। जिससे उन्हें डिलीवरी के समय परेशानी न हो।

**Corresponding Author:**

निशा कुमारी

गृह.विज्ञान विभाग, ल०ना०मि०वि०  
दरभंगा, बिहार, भारत।

आधुनिक काल में गर्भनिरोधक गोलियों के वजह से नयी समस्या का जन्म हो गया है। गर्भनिरोधक गोलियों के लगातार सेवन से महिलाओं में मोटापे की शिकायतें बहुत आती हैं। प्रयोगशालाओं में बने एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरोन हॉर्मोन से तैयार गोलियों का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव है।

इन सब के बाद कुछ ऐसी भी समस्याएँ हैं जिनके वजह से एक दम्पति को माता-पिता बनने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हो पाता। बार-बार गर्भपात होने पर माना जाता है की महिलाएँ गर्भ धारण कर पाने में असमर्थ है तब आई भी एफ (IVF) प्रजनन उपचार (Fertility-Treatment) के द्वारा उन्हें संतान का सुख मिल पाता है।

इस प्रक्रिया में महिला के अंडाशय से अंडे निकालकर उसका संपर्क द्रव माध्यम में शुक्राणुओं से (शरीर के बाहर किसी अन्य पात्र में) कराया जाता है। इसके बाद निषेचित अंडे को महिला के गर्भाशय में रख दिया जाता है। और कभी-कभी गर्भ नालिकाओं के अवरुद्ध हो जाने पर तथा पुरुष के कम शुक्राणु पैदा करने पर इस विधि द्वारा प्रजनन (Fertilization) कराकर संतान की प्राप्ति की जाती है।

### अध्ययन उद्देश्य:

प्रस्तुत शोधकार्य महिलाओं के गर्भावस्था तथा उससे सम्बंधित समस्याओं से सम्बंधित है; समस्याएँ उनके सर्वेक्षण, मूल्यांकन एवं समस्या के निदान हेतु उचित मार्गदर्शन निहित है। इसके अंतर्गत स्त्री शरीर की समस्याएँ, गर्भधारण की तैयारी, गर्भावस्था में शारीरिक परिवर्तन, गर्भ का विकास-क्रम, गर्भावस्था सम्बन्धी विभिन्न परीक्षण, शंकाएँ एवं समाधान गर्भावस्था सम्बन्धी अन्य आयामों का अध्ययन संकलित है।

### व्याख्या एवं विश्लेषण:

महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं के प्रत्यक्ष कारणों को बताना काफी सरल है। जैसे की हम कह सकते हैं की यौन संचारित रोग विभिन्न कीटाणुओं द्वारा होते हैं, उचित मात्रा में अच्छा पोषक मूल्यों वाला भोजन न खाने से कुपोषण हो जाता है तथा गर्भावस्था में होने वाली समस्याएँ अक्सर गर्भावस्था में उचित देख-भाल न होने से होती है परन्तु इस प्रत्यक्ष कारणों के तह में दो मूल कारण हैं- गरीबी तथा महिला का निम्न स्तर। गर्भावस्था की समस्याएँ तथा उसका निदान के सम्बन्ध में कई विद्वान अपनी ओर से प्रयास किए हैं। डॉ. ऑस्टिन मार्टिन की मान्यता है की गर्भवती महिला को विशेष पौष्टिक आहार देने की आवश्यकता है।

गर्भवती के आहार का बच्चे के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। प्राउडफिट एवं रॉबिनसन ने गर्भावस्था कि समस्या से सम्बन्धित अपनी कृति में विचार व्यक्त किया है कि यदि महिलाओं में अधिक वजन की समस्या हो तो सामान्य दूध में प्रयोग करके स्कीमड दूध प्रयोग करना चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने सर्वेक्षणों से ये निष्कर्ष निकाला है की गर्भावस्था के दौरान महिला के शरीर को फोलेट और लौह तत्वों की अधिक जरूरत होती है। डॉ. ग्रांटली डिकरेड ने अपनी पुस्तक 'भयमुक्त प्रसव' में गर्भावस्था के सम्बन्ध में चर्चा किया है। डॉ. ग्रांटली डिकरेड की मान्यता है की अगर महिलाओं के प्रसव सम्बन्धी भय अगर उनके मन से निकाल दे तो उन्हें शारीरिक तनाव और दर्द से मुक्ति मिल सकती है। अतः इस विषय पर शोधकार्य इस विषय के प्रति जिज्ञासा रखने वाली भावी माताओं एवं प्रसूता के लिए प्रासंगिक एवं उपयोगी होगा।

नौ महीने जिस गर्भ को माँ अपने अंदर लिए घुमती है, वो संतान दम्पति की आनुवांशिकता तथा वातावरणीय दोनों तरह से अपने माता-पिता पर ही निर्भर होती है। संतान को जन्म देना प्राकृतिक प्रक्रिया है किन्तु उनका पालन-पोषण सीखने की प्रक्रिया है। जब तक माता प्रशिक्षित नहीं होगी अपनी संतान को प्रशिक्षित नहीं कर सकती। बच्चे राष्ट्र की संपत्ति कहे जाते हैं माता को उन्हें देख-

भाल कर उन्हें सुयोग्य नागरिक बनाना चाहिए। कुछ पूर्वजों के गुण तो स्वतः ही बच्चों में समाविष्ट हो जाते हैं अनुवांशिक गुण अपने आप ही उसके अंदर निहित हो जाते हैं किन्तु वातवरणीय प्रभाव तो बच्चे के जन्म के बाद ही उसे मिल पाता है। चाहे वो उसे माता-पिता से मिले अथवा परिवार के लोगों से या समाज के लोगों से विभिन्न अवस्थाओं में बच्चे का संपर्क विभिन्न लोगों से होता है उस परिस्थिति में वह किससे क्या, कैसे और कितना व्यावहारिक ज्ञान ले पाता है। यह उसकी उस समय की संज्ञानात्मक विकास, मनोवाज्ञानिक विकास पर ही निर्भर करता है।

जब किसी दम्पति की संतान शैशवावस्था में होती है तब वह पुणतः अपनी माँ से लिपटा होता है कहने का तात्पर्य है की वह उस अवस्था में माँ को पहचानने लगता है। ये अवस्था 0 से 5/6 साल की अवस्था होती है इस अवस्था में उसका तीव्र शारीरिक और मानसिक विकास होता है रेंगना, बोलना, चलना, दोहराने की प्रवृत्ति मूल प्रवृत्त्यात्मक व्यवहार, खिलौने के प्रति आकर्षण, अनुकरण करना आदि गुणों का विकास होता है। फिर बाल्यावस्था का काल 5/6 से 12 वर्ष तक का समय, इस अवस्था समूह में खेलना, दोस्त बनाना, भाषा का विकास, झूट बोलने की प्रवृत्ति आदि गुणों का विकास शारीरिक तथा मानसिक विकास में थोड़ी स्थिरता आ जाती है। लेकिन किशोरावस्था में कदम रखते ही सारी विकास की दरों में बढ़ोतरी देखी जा सकती है ये अवस्था 11/12 से 19 साल तक की अवस्था होती है यहाँ पर माता और भी अपने संतान के साथ खड़ी होकर उनकी दोस्त बनकर अपने संतान का मार्गदर्शन करें ताकि उनकी संतान के जीवन में कोई समस्या चाहे-अनचाहे कदम न रखे। किशोरावस्था में विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण पैदा होता है, हार्मोनल चेंजेज होता है उनकी शारीरिक विकास की गति तीव्र हो जाती है कभी-कभी माता-पिता का साथ नहीं मिलने पर यही संतान जीवन पथ पर सही पग न रखते हुए गुमराह होकर गलत कदम भी उठा लेते हैं।

### निष्कर्ष:

इस प्रकार स्पष्ट है कि माता-पिता की अपने संतति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हर एक माता-पिता द्वारा प्रयास करने के बावजूद भी उसकी संतान मनोव्यक्तित्व प्राप्त करने में सक्षम नहीं होते हैं। कभी-कभी ऐसा देखने में आता है की बौद्धिक रूप से काफी संपन्न माता-पिता के संतान भी बौद्धिक रूप से काफी विपन्न होते हैं। ऐसा न होने पाए इसके लिए जननी हमेशा ही तत्पर होती है। वे शिशु गर्भकाल से ही ज्ञानवर्धक पुस्तक पढ़ती है ताकि उनके बच्चे का बौद्धिक विकास सही हो। जननी अपनी संतति के शैशवावस्था या बाल्यावस्था में उन्हें सही ज्ञान देती है उन्हें विद्यालय भेजती है ताकि वे सही मार्ग पर रहे, किशोरावस्था में वे उनकी दोस्त बनकर उनका मार्गदर्शन करती है ताकि वे भविष्य में एक सुयोग्य नागरिक बन कर अपने माता-पिता अपने देश का नाम ऊँचा करें।

### सन्दर्भ-सूची:

1. "महिलाओं का स्वास्थ्य"...<https://www.mahilaswasth.com>
2. "महिलाओं के खराब स्वास्थ्य के कारण"...<https://www.vikaspedia.com>
3. [www.mayoclinic.org](http://www.mayoclinic.org)(IVF)
4. Aandruj, (2008), "Nutritional requirement during pregnancy"
5. Amin N, Abel R. and Sampath K V(1993), Maternal risk factors associated with low birth weight, Ind. Jour. Of Paed.